Read India
An Imprint of Pratham Books

हमारी बालवाड़ी

रुक्मिणी बॅनर्जी

Hamaari Balwadi
by Rukmini Banerji
© Pratham Books, 2004

Fourth Hindi Edition: 2008

Illustrations: Sheetal Thapa

ISBN: 81-8263-054-1

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 0043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526, New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Trimiti Services

Printed by: Manipal Press, Manipal

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

The development of this book was sponsored by
Dubai Creek Round Table, Dubai, U.A.E.

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

हमारी बालवाड़ी

लेखिका

रुक्मिणी बॅनर्जी

चित्रांकन

शीतल थापा

यह मेरा स्कूल है । इसे बालवाड़ी कहते हैं ।

बाल वाडी

मैं और मेरा भाई मोनू बालवाड़ी में जाते हैं ।
हम जैसे छोटे बच्चों के लिए यह छोटा सा स्कूल है ।

हम अपने जूते-चप्पल दरवाज़े के पास उतार देते हैं ।
सब जूते-चप्पल एक कतार में रखते हैं ।
ऐसे अच्छा लगता है ।

हम अपने टिफ़िन के डिब्बे दीवार के पास रख देते हैं ।
कुछ डिब्बे बड़े हैं । कुछ छोटे हैं ।
पानी की बोतलें लटका देते हैं ।
बोतलें रंग-बिरंगी हैं । लाल, नीली, हरी, पीली ...

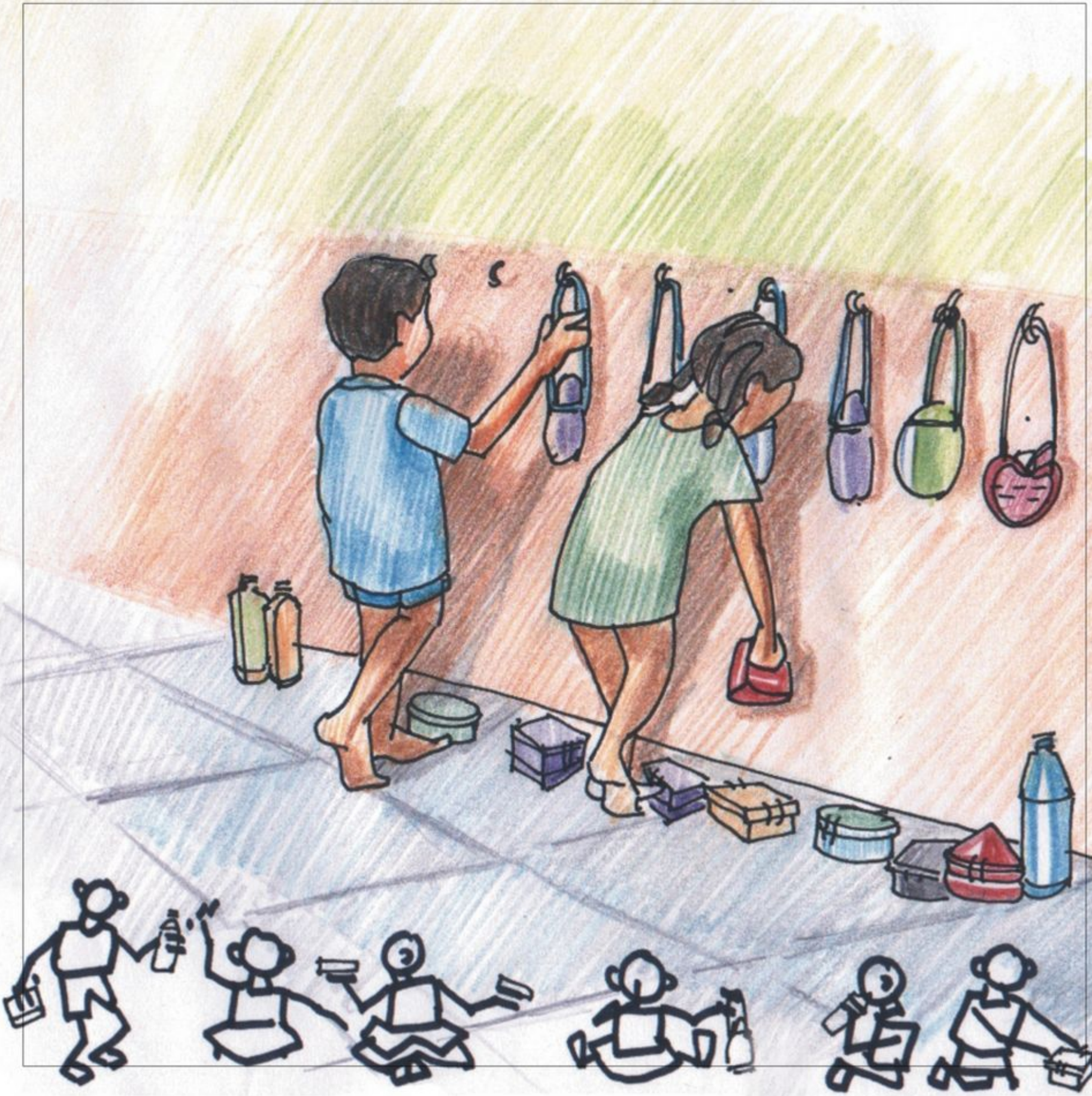

मुझे गिनना अच्छा लगता है ।
मोनू ब्लॉक से खेलता है ।
उसे मोतियों के साथ खेलना अच्छा लगता है ।
मुझे बिन्दियों वाले कार्ड पसंद हैं ।
हमारी टीचर कहती हैं कि इन खिलौनों के
साथ खेलने से दिमाग तेज़ होता है ।

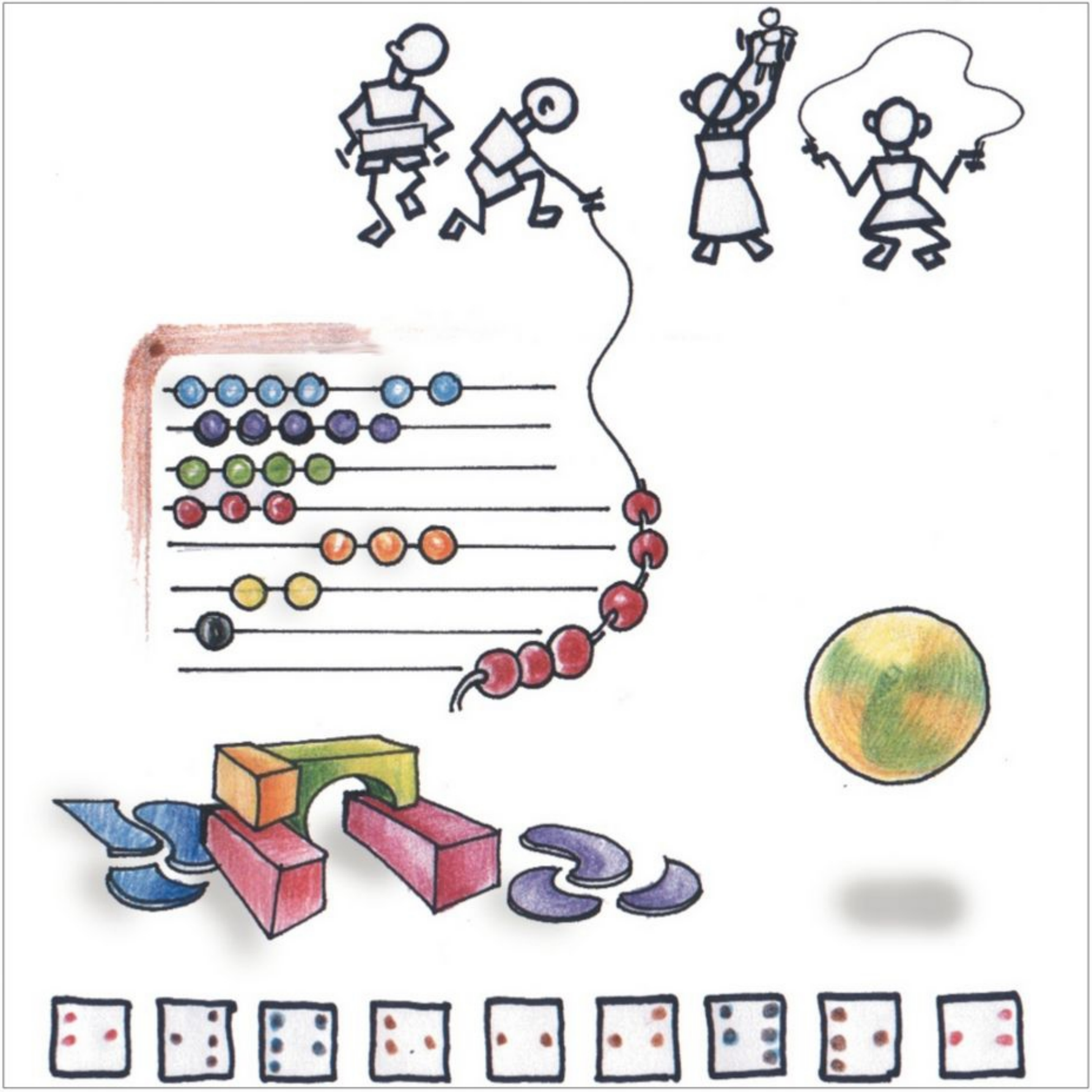

हम किताब पढ़ते हैं । कुछ किताबों में चित्र होते हैं ।
टीचर अक्षर याद कराने में हमारी मदद करती हैं ।
वे कहती हैं कि मैं जल्दी पढ़ना सीख जाऊँगी,
क्योंकि मैं सभी अक्षरों को पहचान सकती हूँ ।
टीचर नहीं जानती हैं कि मैं पूरा वाक्य भी पढ़
सकती हूँ ।

अ
आ

अब कहानियों का समय है ।

टीचर के पास हाथ में पहनने वाली गुड़ियाँ हैं ।

गुड़ियों के साथ टीचर कहानी सुनाती हैं ।

गुड़ियाँ मज़ेदार आवाज़ में बोलती हैं ।

बाल वाडी

मेरे दोस्तों को लगता है कि गुड़ियाँ बोल रही हैं ।
उन्हें अजीब लगता है ।
मैं जानती हूँ कि गुड़ियाँ बोल नहीं सकतीं ।
टीचर उनके लिए आवाज़ बदल कर बोलती हैं ।

अब खेलने का समय है ।

बालवाड़ी मे एक टब है ।

टब में गीली मिट्टी है ।

मिट्टी से मुझे फल, खिलौने और कई

दूसरी चीज़ें बनाना अच्छा लगता है ।

अ
आम

चार बजे, स्कूल की घंटी बजती है ।
माँ हमें घर ले जाने आई हैं ।
मैं पहले ही माँ के गले लग जाती हूँ ।
यह मोनू को अच्छा नहीं लगता है ।
वह शिकायत करता है ।
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है ।
लेकिन घर जाना और भी अच्छा लगता है ।

हमने क्या किया, कहाँ गये, क्यूँ वगैरह बताने में बच्चों को बहुत मज़ा आता है।

ऐसे ही बच्चों के अनुभव कुछ और किताबों मे आपको पढ़ने को मिलेंगे।

- **हम बाज़ार गये**
- **चाचा की शादी**
- **चलो किताबें खरीदने**
- **घर जाना है**

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंगेजी, हिन्दी, तमिल, तेलुगू, कन्नड, मराठी, गुजराती, बाँग्ला, पंजाबी, उर्दू व ओड़िया भाषाओं में उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने वाली गैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 81-8263-054-1

9 788182 630543

Age Group: 3-6 years
Hamari Balwadi (Hindi)
MRP Rs. 15.00